बढ़ाकर आर्थिक नीति में सुधार किया जाए।

☆ धनी वर्ग पर अधिक कर लागू किया जाए।

☆ अप्रत्यक्ष करों (Other indirect taxes) में कमी और प्रत्यक्ष करों (Direct मतलब Income Tax) की दर में वृद्धि की जाए।

☆ बजट को समाज के वंचित वर्गों जैसे SC, ST मुसलमान, महिला, ग्रामीण क्षेत्रों, शहर के गरीब निवासियों और विकलांगों की सेवा के लिए बनाया जाए।

☆ पंचवर्षीय योजना में एक मुस्लिम कंपोनन्ट योजना (Muslim Component Plan, यानी केवल मुसलमानों के लिए योजना) शामिल हो।

(14) ☆ डॉ. रघोराम राजन की सर्करदगी में योजना आयोग की Financial Sector Reforms समिति की सिफ़ारिश के अनुसार बैंकिंग में सूद रहित वित्त शुरू कराया जाए।

☆ देश के वंचित वर्गों और अल्पसंख्यांक समग्र विकास Inclusive Growth से लाभान्वित हो सकें इस के लिए उचित क़ानून बनाया जाए।

(15) ☆ उचित क़ानून बना कर यह सुनिश्चित किया जाए कि किसी भी महत्वपूर्ण वैश्विक समझौते के आयोजन या देश की विदेश नीति में परिवर्तन के लिए संसद की पुष्टि आवश्यक हो। ऐसा करना इसलिए आवश्यक है कि देश की विदेश नीति आजाद और निष्पक्ष, सम्राज्यवाद विरोधी, लोकतंत्र समर्थक और मानव दोस्ती के सिद्धांतों पर आधारित हो जिसमें नीति फलस्वरूप पड़ोसी देशों के साथ बेहतर संबंध

सांस्तिक पहचान के लिए एक बड़ा खतरा मानते हैं। स्वतंत्रता के सात दशकों के बाद भी देष एक निष्पक्ष, गैर भेदभावी और न्यायवादी और अपने नागरिकों के रक्षक की भूमिका निभाने और जनता का विश्वास बहाल करने में विफल रहा है।

फासीवादी और स्व–स्वामित्ववादी राजनीतिक आंदोलन का उदय देश के लिए हलाहल विश है। यह घटना संविधान के उच्च मूल्यों और देश के बहुधर्मिय और लोकतांत्रिक ढांचे के लिए गंभीर खतरा है। और देश की एकता, अखंडता और भारतीय अवधारणा के लिए खतरे की घंटी है।

भ्रष्टाचार धीरे धीरे एक बेकाबू दानव का रूप धारण कर चुका है जिसके आगे पूरी व्यवस्था बेबस नजर आती है। राजनीतिक संस्थाएं हर स्तर पर करपशन का शिकार हैं। इसके विनाशकारी प्रभाव ने नौकरशाही को लक़वाग्रस्त कर दिया है और अब मीडिया और न्यायपालिका भी इसकी चपेट में आते जा रहे हैं।

वासतविक्ता यह है कि ईषभय और नैतिकता एंव आध्यात्मिकता वह कारक हैं जो एक सही और सुदृढ़ समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। दुर्भाग्य से हमारे देश में धर्म का इस्तेमाल ज्यादातर भेदभाव को हवा देने, समाज में कलह पैदा करने और कमजोरों का शोषण करने के लिए किया गया है, जबकि धर्म की वास्तविक भावना को जागृत किया जाए तो भारत जैसे धार्मिक समाज में धार्मिक और आध्यात्मिक मूल्य एक स्वस्थ सामाजिक क्रांति पैदा करने में रचनात्मक भूमिका अदा कर सकती हैं।

2014 के चुनाव, जनता को यह अवसर प्रदान करते हैं कि वे संविधान में मान्यता प्राप्त बुनियादी मूल्यों के संरक्षण के लिए प्रभावी उपाय करें।

इस उद्देश्य की .ष्टि से जमात–ए–इस्लामी हिन्द के निम्नप्रस्तावित